# आज के छोटे-छोटे गाँधी

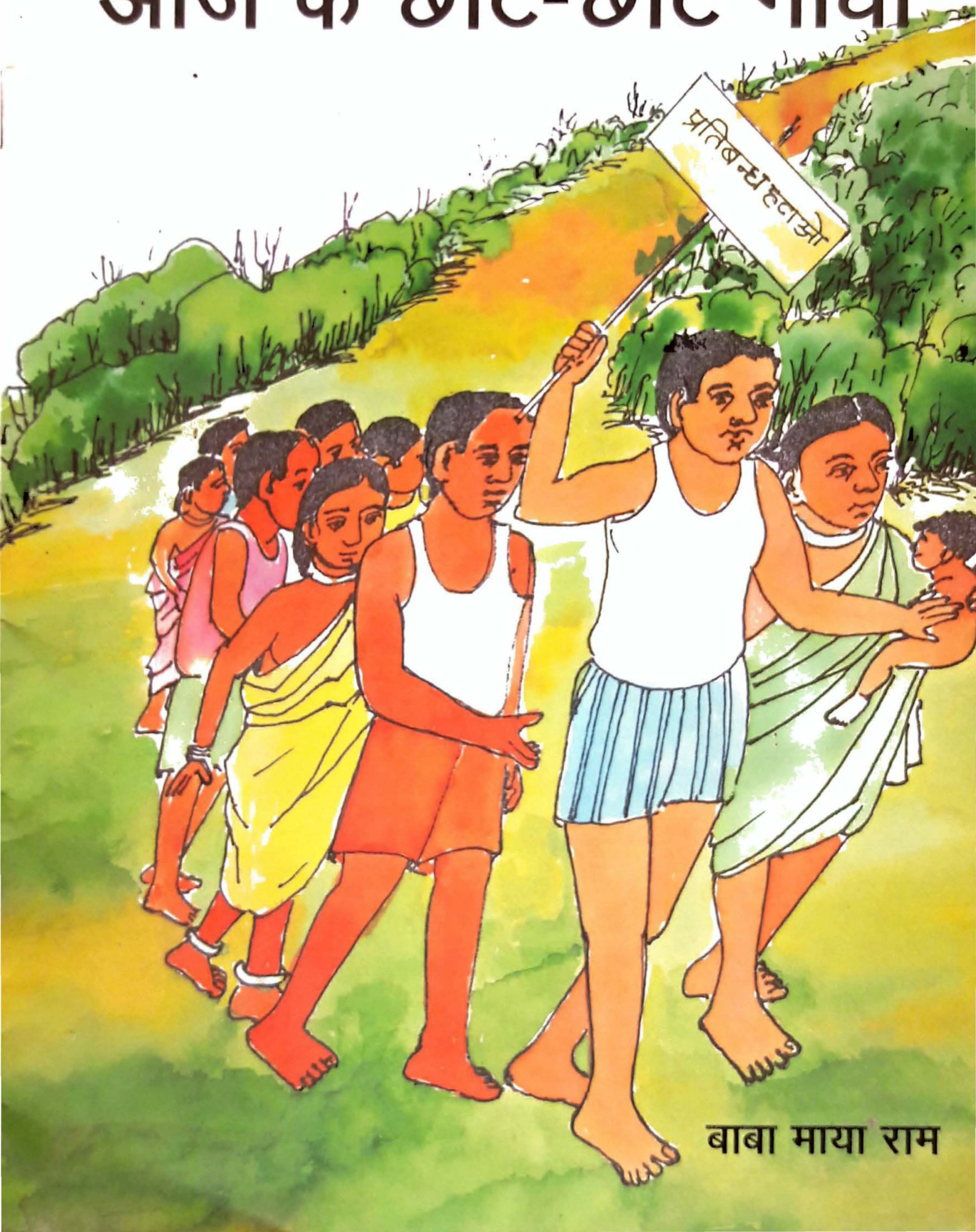


बाबा माया राम

# आज के छोटे-छोटे गाँधी

प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
10, जाम नगर हाउस हटमेंट्स
शाहजहाँ रोड़, नई दिल्ली - 110011

# दो शब्द

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के तहत देश के विभिन्न जिलों में आजकल पंद्रह वर्ष से अधिक आयु के निरक्षरों को साक्षर बनाने का अभियान चल रहा है। इस अभियान को आशा के अनुरूप सफलता मिली है और हर साल लाखों निरक्षर साक्षर बनकर निकल रहे हैं।

ऐसा देखा गया है कि बुनियादी साक्षरता प्राप्त इन नवसाक्षरों में आगे भी पढ़ते-लिखते रहने की ललक होती है। इसके लिए ज़रूरी है कि नवसाक्षरों को उपयोगी और रुचिकर साहित्य दिया जाए। साहित्य सचित्र और सरल भाषा में हो ताकि शिक्षार्थी उसे आसानी से पढ़ लें। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उत्तर साक्षरता कार्यक्रम तथा सतत् शिक्षा कार्यक्रम को भी अभियान के साथ जोड़ा गया है। इस अवधि में पुस्तकालय और वाचनालय के ज़रिए नवसाक्षरों को स्वयं पढ़ने हेतु सरल साहित्य उपलब्ध कराया जाता है।

नवसाक्षरों की रूचियों और ज़रूरतों के अनुरूप सरल साहित्य मुहैया कराने के लिए प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय, भारत सरकार की ओर से समय-समय पर नवसाक्षर साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। इसी कड़ी में सन् 2007 में 30 वीं प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। यह पुस्तक इसी प्रतियोगिता की देन है।

इस पुस्तक की मूल प्रति में नवसाक्षरों की भाषागत् क्षमता एवम् रुचियों के अनुरूप कुछ परिवर्तन किए गए हैं। इस पुस्तक का संपादन श्रीमती निशात फ़ारुक और डॉ॰ डी॰ एस॰ मिश्रा ने श्रीमती कुसुमवीर, अपर निदेशक व श्री हरपाल सिंह, सहायक निदेशक के सुझावों के अनुसार किया है। हम इन सभी के प्रति आभार प्रकट करते हैं।

श्रीमती अनीता कौल, महानिदेशक, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के प्रति विशेष रूप से आभारी हैं जिन्होंने इस पुस्तक को अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर प्रकाशित करने में खासी दिलचस्पी दिखाई है।

अंत में मैं श्रीमती रजनी तथा श्रीमती वीना राजपाल, आशुलिपिकों, जिन्होंने इन पुस्तकों के टंकण में सहायता की है और श्री के॰ बी॰ थापा, कुमुद सिन्हा, सुनीत सक्सेना चित्रकार जिन्होंने सामग्री में सजीव चित्रों का समावेश किया है, के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ।

डॉ॰ रूपकृष्ण भट,
निदेशक

प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय,
दिनांक : 8 सितम्बर, 2008

# आज के छोटे-छोटे गाँधी

मध्यप्रदेश की सतपुड़ा घाटी में पिछले साल एक अनूठा आंदोलन चलाया गया। यह आंदोलन घाटी में रहनेवाले आदिवासियों ने चलाया था। उन्होंने इस आंदोलन का नाम रखा था - सद्‌बुद्धि सत्याग्रह। वे रोज जिला मुख्यालय आते। फिर जुलूस बनाकर टाइगर रिजर्व के डायरेक्टर के दफ्तर में जाते। वहां वे भगवान से प्रार्थना करते कि वे अफसरों और सरकार को सद्‌बुद्धि दें। जुलूस के पहले वे नर्मदा नदी में स्नान करते फिर महात्मा गांधी की मूर्ति पर फूलों की माला चढ़ाते। उनकी मांग थी कि जल, जंगल, जमीन, पर उनका हक है। उनके हक पर जो रोक लगाई जा रही है, वह गलत है।

यह सत्याग्रह वर्ष 2006 में एक माह तक चला। आदिवासी तवा जलाशय में मछली पकड़ने का अधिकार चाहते थे। दस साल पहले उन्हें यह अधिकार लंबी लड़ाई के बाद मिला था। अब उसे फिर छीना जा

रहा था। आदिवासी शांतिपूर्ण ढंग से इसके खिलाफ सत्याग्रह कर रहे थे।

सत्याग्रह का यह हथियार गांधी जी ने दिया है। यह हथियार कमजोरों को ताकतवर बना देता है। सत्याग्रह अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने का अनूठा तरीका है। इसमें खुद कष्ट सहकर सत्य की खोज में बलिदान

के लिए तैयार रहना पड़ता है। सत्याग्रह केवल सतपुड़ा की घाटी में बसे आदिवासियों ने ही नहीं किया है। देश के अलग-अलग हिस्सों में आम जनता ने अपनी छोटी छोटी मांगों और अपने अधिकारों के लिए भी इसका इस्तेमाल किया है। इस तरह उन्होंने शांतिपूर्वक तरीके से अपने अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी है।

गांधीजी ने संघर्ष के साथ ही साथ समाज-सुधार के कार्यक्रम भी चलाए। एक तरफ उन्होंने समाज को जोड़ने और समाज को बेहतर बनाने के लिए कार्यक्रम चलाए। जैसे शराबबंदी आंदोलन, चरखा और खादी, साफ-सफाई की मुहिम, छुआछूत मिटाना, प्राकृतिक चिकित्सा और शिक्षा को काम से जोड़नेवाली 'नई तालीम'। दूसरी तरफ उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ जोरदार संघर्ष चलाया। अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई। इसके लिए उन्होंने विदेशी कपड़ों की होली जलाई और 'अंग्रेज भारत छोड़ो' जैसे आन्दोलन भी चलाए।

गांधीजी ने स्वावलंबी और आत्मनिर्भर गांवों का सपना देखा था। आज भी ऐसे कामों की बहुत जरुरत है जिससे गांव स्वावलंबी बनें। वे सदैव लघु-कुटीर, खादी और चरखा जैसे कार्यक्रमों पर जोर देते थे। आज की शिक्षा सिर्फ याद करके परीक्षा में उगल देने पर जोर

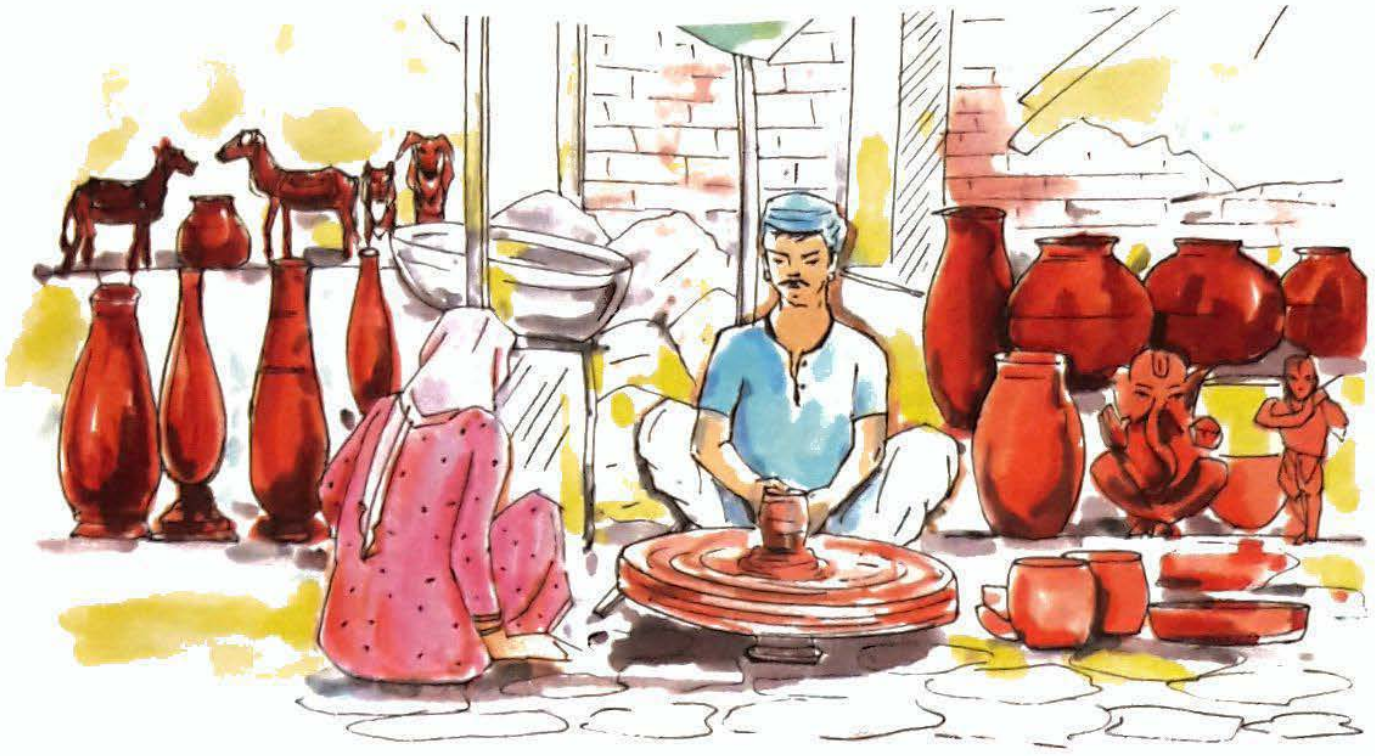

देती है। परन्तु बापू की 'नई तालीम' करके सीखने को बढ़ावा देती है।

उन्होंने अपने जीवन के आखिरी दिनों में कांग्रेस को 'लोक सेवक संघ' में बदलने की इच्छा जताई थी ताकि ये सब काम अच्छे ढंग से किए जा सकें।

आज भी देश के अलग-अलग हिस्सों में कई संगठन और समूह रचना और संघर्ष के कामों में जुटे हैं। जैसे नर्मदा घाटी में बड़े बांधों के खिलाफ नर्मदा बचाओ आंदोलन, उत्तराखण्ड में टिहरी बांध का संघर्ष, एकता परिषद् का जमीन के अधिकार के लिए आंदोलन,

भोपाल गैस पीड़ित महिलाओं की अच्छी सेहत और मुआवजे की लड़ाई, उड़ीसा में किसानों और विस्थापितों का आंदोलन, आदिवासियों का संघर्ष, भ्रष्टाचार से निजात पाने के लिए सूचना का अधिकार पाने की मुहिम, गरीब आदिवासियों की सेवा में जुटे बिलासपुर, छत्तीसगढ़ के पास गनियारी के डॉक्टर। इन सभी में गांधी जी के कामों की झलक मिलती है।

इसके अलावा, उत्तराखण्ड में पेड़ों को कटने से बचाने के लिए चिपको आंदोलन चलाया गया था। श्री सुंदरलाल बहुगुणा ने इसकी शुरुआत की थी। कुछ समय पहले उन्होंने टिहरी बांध को रोकने के लिए लंबा अनशन भी किया था। बाबा आमटे खुद बरसों तक नर्मदा आंदोलन को ताकत देने के लिए नर्मदा के किनारे एक गांव में रहे। इससे पहले वह लंबे समय तक कुष्ठ रोगियों की सेवा करते रहे थे। इस प्रकार के कई उदाहरण हैं। लेकिन यहां इतना ही बताना काफी है कि ऐसे कई अनाम व्यक्ति और संगठन है जो ऐसे कामों में लगे हैं। हो सकता है वे गांधी जी की सोच से पूरी तरह सहमत न हों या वे अपने आपको गांधी के नाम से न

जोड़ना चाहते हों। लेकिन उनके कामों को गांधी की तरह का ही कहा जा सकता है।

गांधी जी ने भोग और विलासिता को बढ़ावा देनेवाली अंग्रेजी सभ्यता को शैतानी सभ्यता कहा था। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी सभ्यता दूसरों का नाश करनेवाली और खुद नाशवान है। उन्होंने अपनी पुस्तक 'हिन्द स्वराज्य' में इस विषय पर बहुत कुछ लिखा है। उन्होंने कहा था "पृथ्वी हर व्यक्ति की जरुरत पूरा करने का सामर्थ्य रखती है, पर उसके लालच का नहीं।"

आज हिंसा-प्रतिहिंसा के दौर में गांधीजी को बहुत ज्यादा याद किया जा रहा है। जल, जंगल और जमीन को लेकर सभी जगह संघर्ष चल रहे हैं। एक तरफ चिंता है कि प्राकृतिक संसाधनों का विनाश हो रहा है। दूसरी तरफ चिंता है कि जो प्राकृतिक संसाधन बचे हुए हैं, उन पर किसका अधिकार हो। यानी प्राकृतिक संसाधनों का सवाल आज पूरी दुनिया के सामने है। इन सब सवालों और समस्याओं का समाधान गांधीजी के जीवन, सोच और कार्यक्रमों में मिल सकता है।

देश के जन आंदोलन और जन संगठन अपने-अपने स्तर पर ऐसे कई सवाल उठा रहे हैं। आज के छोटे-छोटे गांधी इन्हीं संघर्षों और रचना के काम में जुटे हैं। अगर हम भी अपने जीवन में गांधीजी की कुछ बातों को अपना लें तो हमारा जीवन तो सरल होगा ही, दुनिया भी बेहतर बनेगी।

प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

10, जाम नगर हाउस हटमेंट्स

शाहजहाँ रोड़, नई दिल्ली - 110011